

रोम रोम भाये हो (११५)

नन्द के कुमार छाई बृज में बहार है ।

आजा मन मोहना तेरा इन्तजार है ॥

ओ यमुना के तीर पिया मुरली बजाओ तुम—२

मधुर संगीत से श्रीराधा राधा गाओ तुम—२ ॥१॥

ओ पनियां भरन जाऊं तेरी ही प्यास है—२

आय मेरा मगु रोको जीयड़ा उदास है—२ ॥२॥

ओ घुंघुरारी अलकें नैनों में खुमार है—२

दर्शन दमक की शोभा बेशुमार है—२ ॥३॥

ओ तेरे मुख चन्द्र लिये नैन ये चकोर है—२

तुम हो सजल घन मन मेरा मोर है—२ ॥४॥

ओ माखन के चोर तुम चित को चुराते हो—२

बलि बलि जाऊं मेरे रोम रोम भाये हो—२ ॥५॥